विषय-सूची

प्राक्कथन

अध्याय - 1

	मन्नू भंडारी: व्यक्तित्व और कृतित्व	1-25
1.1	जन्म और घरेलू परिस्थिति	1-2
1.2	शिक्षा	2-4
1.3	नौकरी और शादी	4-5
1.4	मातृत्व	5
1.5	देश-प्रेम	6
1.6		
1.7.1	मन्नूजी की रचना-प्रक्रिया	9-10
1.7.2	उपन्यासकार मन्नू भंडार	10-13
1.7.3	नाटककार मन्नू भंडारी	13-14
1.7.4	कहानीकार मन्नू भंडारी	14-20
1.7.5	कहानी -लेखकों को मन्नूजी का सुझाव	20
1.7.6	कहानी-संकलनों में असमाविष्ट कहानियाँ	20
1.7.7	'अलगाव' कहानी	21
1.7.8	नई कहानी आन्दोलन और मन्नू भंडारी की कहानियों में व्याप्त प्रेम का संसार	21-22
1.8	पुरस्कार एवं सम्मान	22-23
1.9	मन्नूजी की रचनाओं का मंचन	23-24
1.10	मन्नूजी की रचनाओं के अनुवाद	24
1.11	मन्नूजी की रचनाओं का फिल्मीकरण	24-25

अध्याय - 2

	हिन्दी उपन्यास साहित्य में मन्नू भंडारी का स्थान	26-47
2.1	प्रारंभिक हिन्दी उपन्यास	26-27
2.2	प्रेमचन्दोत्तर युग के लिए प्रेमचन्द का योगदान	27-34
2.3	आधुनिकता बोध के उपन्यास	35-37
2.4	हिन्दी की प्रमुख उपन्यास लेखिकाएँ	37-43
2.4.1	हिन्दी की उपन्यास लेखिकाओं में मन्नू भंडारी का स्थान	43-47

अध्याय -3

	मन्नू भंडारी के उपन्यास : कथावस्तु संक्षेप में	48-79
3.1	एक इंच मुस्कान	48-50
3.2	आपका बंटी	51-56
3.3	कलवा	56-63
3.4	महाभोज	63-69
3.5	आसमाता	69-75
3.6	स्वामी	75-79

अध्याय - 4

	मन्नू भंडारी के उपन्यास में आधुनिकता	80-212
4.1	आधुनिकता :एक परिचय	80-108
4.1.1	आधुनिकता के विविध संदर्भ	80
4.1.2	वर्तमान समाज में मूल्य-संक्रमण	81-82
4.1.3	राष्ट्रीय आन्दोलन और नारी-स्वतंत्रता	82-84
4.1.4	वर्तमान समाज में नर-नारी की मानसिकता	84-89
4.1.5	उच्च वर्ग, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग	89-90
4.1.6	आधुनिक नारी-काम काजी	90-91
4.1.7	अन्तर्द्वन्द्व	91
4.1.8	अहं और आधुनिक नारी	92
4.1.9	काम	93
4.1.10	मूल्य	93-95
4.1.11	दाम्पत्य-जीवन की विसंगतियाँ	95
4.1.12	स्त्री और आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबन	96-97
4.1.13	अकेलापन	97-98
4.1.14	अजनबीपन	98
4.1.15	आधुनिकता और समकालीनता	98
4.1.16	आधुनिकता और नवीनता	99-100
4.1.17	आधुनिक नर-नारी और युगबोध	100-101

4.1.18	नर	101-102
4.1.19	नारी	103-104
4.1.20	अस्तित्ववाद और आधुनिकता	104-105
4.1.21	हिन्दी साहित्य में आधुनिकता	105-108
4.2	मन्नू भंडारी के उपन्यासों में आधुनिकता	109 - 212
4.2.1	एक इंच मुस्कान	109
4.2.1.1	विवाहेत्तर प्रेम संबन्ध	109
4.2.1.2	वासनायुक्त प्रेम	109-110
4.2.1.3	आधुनिक स्त्री-पुरूषों की दिशा-विहीन जीवन यात्रा	110-111
4.2.1.4	दाम्पत्य जीवन की विसंगतियाँ	111
4.2.1.5	अकेलापन	112
4.2.1.6	मनोविज्ञान	112-113
4.2.2	आपका बंटी	113-114
4.2.2.1	अहं	115-116
4.2.2.2	मोहभंग	116-118
4.2.2.3	अन्तर्द्वन्द्व	118-119
4.2.2.4	अकेलापन	119
4.2.2.5	पारिवारिक विघटन	120
4.2.2.6	निराशा	121-122
4.2.2.7	नगरबोध	122
4.2.3	कलवा	123
4.2.3.1	शिक्षा प्रणाली	123-126
4.2.3.2	'शासन' आधुनिक संदर्भ में	126-128
4.2.3.3	अन्तर्जातीय विवाह	128-130
4.2.3.4	गरीबों का शोषण	130-131
4.2.3.5	मूल्य-च्युति	131
4.2.3.6	स्वार्थ	132
4.2.3.7	'कलवा' में दर्शन	132-133

4.2.3.8	स्वावलंबन का महत्व	134-135
4.2.3.9	परिश्रम का महत्व	135-138
4.2.3.10	अवसरवादी चालाक व्यक्तियों से संबन्ध-विच्छेद का उपदेश	138-139
4.2.3.11	विषयासक्ति से दूर रहने का उपदेश	139-140
4.2.3.12	सच्चा प्रजा-पालक	140
4.2.3.13	भाग्य के हेर-फेर का चित्रण	141
4.2.3.14	मातृ-पितृ भक्ति	141-143
4.2.3.15	धार्मिक पाखंडता	143
4.2.3.16	जात-पांत तथा उच्च-नीच भाव का विरोध	143-145
4.2.4	महाभोज	
4.2.4.1	राजनैतिक-सामाजिक उपन्यास के रूप में- 'महाभोज'	146-147
4.2.4.1.1	महाभोज में राजनीति	
4.2.4.1.1.1	महाभोज में आज के सत्ताधारी	147-152
4.2.4.1.1.2	समकालीन राजनीतिज्ञ के रूप में दा साहब	153-160
4.2.4.1.1.3	सुकुल बाबू : विपक्षी उम्मीदवार	160-163
4.2.4.1.1.4	ज़ोरावर सिंह कूटनीतिज्ञ एवं गुण्डावर्दी का मूर्तरूप	164-166
4.2.4.1.1.5	त्रिलोचन सिंह रावत : आदर्शवान राजनीतिज्ञ	166-168
4.2.4.1.1.6	चुनाव में समाचारपत्रों का महत्व	168-172
4.2.4.1.1.7	महाभोज में तत्कालीन समाज का चित्रण	173-175
4.2.4.1.1.8	भाषण का महत्व	175-178
4.2.4.1.1.9	चुनाव में नारों का हिस्सा	178-180
4.2.4.1.2	महाभोज में सामाजिकता	180-181
4.2.4.1.2.1	जाति-पांत की समस्या	181-182
4.2.4.1.2.2	आर्थिक पराधीनता की समस्या	183-184
4.2.4.1.2.3	शिक्षा की समस्या	184-186
4.2.4.1.2.4	वैयक्तिक पराधीनता की समस्या	186-187
4.2.4.1.2.5	अज्ञता	187
4.2.4.1.2.6	शोषण की समस्या	188
4.2.4.1.2.7	बिसेसर:निस्वार्थ समाज प्रेम का शहीद	189-190
4.2.4.1.2.8	बिन्देश्वरी प्रसाद: निडर समाज सेवी	191-192
4.2.4.1.2.9	एस.पी.सक्सेना: मन्नूजी के आदर्शों के प्रतिरूप	193-194

4.2.5	आसमाता	
4.2.5.1	आधुनिक नारी का प्रतिरूप – प्यारी राणी	194 - 197
4.2.5.2	स्वार्थ भाव	197
4.2.5.3	अहं	197 - 198
4.2.5.4	शंका ग्रस्थ मानसिकता	198
4.2.5.5	दाम्पत्य जीवन की विसंगतियाँ	198 - 199
4.2.5.6	पति सेवा में विमुखता	199
4.2.5.7	परंपरागत जीवन मूल्यों का शोषण	199 - 200
4.2.6	स्वामी	200 - 201
4.2.6.1	विवाह पूर्व प्रेम	201
4.2.6.2	वासना पूर्ण प्रेम	201 - 203
4.2.6.3	वासना हीन प्रेम	203 - 204
4.2.6.4	प्रेम के बदलते रूप	204 - 206
4.2.6.5	अहं	206 - 207
4.2.6.6	अहंग्रस्त-व्यक्ति	207 - 208
4.2.6.7	स्वार्थ	208 - 209
4.2.6.8	अन्तर्द्वन्द्व	209 - 210
4.2.6.9	कल्पना और वास्तविकता का द्वन्द्व	210
4.2.6.10	अकेलापन	211
4.2.6.11	संत्रास	211 - 212
4.2.6.12	नगरी सभ्यता	212

अध्याय. 5

	मन्नू भण्डारी के उपन्यासों की शिल्प-विधि	213 - 299
5.1	कथा - वस्तु संगठन	216 - 227
5.2	पात्र - योजना	227
5.2.1	बाल पात्र	227 - 228
5.2.2	स्त्री पात्र	228 - 230
5.2.3	पुरुष पात्र	231 - 242
5.3	देश-काल या वातावरण	242 - 244
5.3.1	ग्रामीण एवं महानगरीय परिवेश	244 - 245

5.3.2	राजनैतिक वातावरण	245-248
5.3.3	पारिवारिक वातावरण	248- 258
5.4	भाषा	258 - 264
5.4.1	प्रादेशिक भाषा के शब्द	259 - 260
5.4.2	अंग्रेज़ी शब्द	260 - 262
5.4.3	अशुद्ध भाषा	263 - 264
5.5	शैली	264 - 288
5.5.1	चित्रात्मक शैली	264 - 267
5.5.2	संवाद शैली	267 - 272
5.5.3	प्रतीकात्मक शैली	272 - 275
5.5.4	पत्र - शैली	276 - 277
5.5.5	डायरी शैली	278 - 279
5.5.6	स्मृत्यवलोकन शैली	279 - 284
5.5.7	वर्णनात्मक शैली	284 - 288
5.6	शीर्षक की सार्थकता	289 - 293
5.7	जीवन- दर्शन	293 - 299
	उपसंहार	300 - 306
	ग्रन्थ-सूची	307 - 312